

KĀTJ. ÇR. 4, 3, 6. 16, 1, 37. अविशेषोपदेशात् 2, 6, 20. 1, 8, 17. RV. PRĀT. 1, 10, 13. MBH. 3, 752. SUGR. 1, 147, 19. 2, 357, 18. PRAB. 109, 16. योपदेशम् nach der Vorschrift KĀTJ. ÇR. 24, 1, 3. MBH. 3, 8710. am Ende eines adj. comp. f. आः स्थिरोपदेशम् KUMĀRAS. 1, 30. गृहीतोपदेशा die eine Anweisung erhalten hat PRAB. 103, 5. Bei den Buddhisten ist उपदेश = तत्र BURN. Intr. 63. fg. 624. fg. — 2) Hinweis, Vorwand: भक्ष्यभोज्योपदेशैश्च ब्राह्मणानां च दर्शनैः । शौर्यकर्मोपदेशैश्च कुरुतेषां समागमम् ॥ M. 9, 268. ÇĀK. CB. 37, 1. RAGH. 2, 8, v. l. Vgl. अपदेश. — 3) gramm. die in grammatischen Lehrbüchern angenommene Bezeichnungsweise einer Wurzel, eines Themas, eines Suffixes u. s. w. (ohne Rücksicht auf die in der lebendigen Sprache erscheinende Lautform) P. 1, 3, 2. 6, 1, 45. 186. 6, 4, 37. 62. 7, 3, 34. Sch. zu 6, 1, 59. 64. 65. VOP. 8, 43.

उपदेशता (von उपदेश) f. das Lehre-, Vorschrift-Sein: तथा हि ते शीलमुदारदर्शनं तपस्विनामप्युपदेशतां गतम् ist eine Lehre auch für die Büsser geworden KUMĀRAS. 5, 36. Art und Weise des Vortrages, der Lehre: वर्गक्रमस्तथा नामलिङ्गोपदेशता । परिभाषादिकं सर्वमत्राप्यमरकोषवत् ॥ TRIK. 1, 1, 3.

उपदेशक (von दिष् mit उप) adj. subst. lehrend, Lehrer: धर्मोपदेशक H. 77.

उपदेशना (wie eben) f. Unterweisung, Lehre: इमा धर्मोपदेशनामकोरात् PĀNĀT. 163, 17. 166, 13.

उपदेशसकृन्नी (von उ० + सकृन्) f. Titel eines philos. Werkes von Çaṁkara Verz. d. B. H. No. 614.

1. **उपदेशिन्** (von दिष् mit उप) adj. subst. unterweisend, Lehrer, Rathgeber: गतानुगतिको लोकः कट्टनीमुपदेशिनीम् । प्रमाणपति नो धर्मं यथा गोत्रमपि द्विजम् ॥ HIT. I, 9.

2. **उपदेशिन्** (von उपदेश 3.) m. ein Wort u. s. w. in seiner ursprünglichen, in den grammatischen Lehrbüchern angenommenen Form P. 6, 3, 52, Vārt. 2. 7, 2, 99, Vārt. 3.

उपदेश्य (von दिष् mit उप) adj. worin man unterwiesen wird, was man lernt: विद्याश्च वा अविद्याश्च यच्चान्यडुपदेश्यम् AV. 11, 8, 23.

उपदेश्छ (wie eben) nom. ag. Anweiser, Unterweiser, Lehrer MBH. 3, 1255. 14, 1295. PĀNĀT. 156, 17.

उपदेश्य (wie eben) adj. anzuweisen, zu lehren: न किंचिदिह तवोपदेश्यमस्ति MĀKĀ. 86, 13.

उपदेह (von दिह् mit उप) m. Ueberzug, sich ansetzende Aussonderung (an kranken Körpertheilen) SUGR. 1, 83, 15. कण्डूपदेहौ 2, 313, 3. 238, 6. 348, 17. गुदोपदेह 202, 8. दौर्गन्ध्योपदेहौ 136, 8. 1, 270, 14. अश्रुपुणोपदेहवत् 2, 304, 6.

उपदेहिका (wie eben) f. eine Ameisenart H. 1207. — Vgl. उपनिहिका, उपदीका.

उपेदाह (von उह् mit उप) m. Zitze am Kuheuter: कांस्योपेदाह (गौः) MBH. 3, 12725. 12727. 18, 222.

उपद्रव (von हु mit उप) m. 1) widerwärtiger Zufall, Unfall, Widerwärtigkeit, Unheil AK. 3, 4, 186. H. 125. KĀND. UP. 2, 8, 2 (ein Vidhi des Sāman; vgl. Ind. St. 1, 56). MBH. 3, 1346. कामाश्रितवाद्यैव 11255. 11259. पुंसामसमर्थानामुपद्रवायात्मना भवेत्कोपः PĀNĀT. I, 368. मा भूते मन्त्रिमित्तमुपद्रवः KATHĀS. 17, 82. अन्नस्य Hungersnoth R. 2, 108, 14. अकृतो-

पद्रवः कश्चिन्महानपि न पूज्यते । पूजयति नरा नागानं तार्क्ष्यं नागधातिनम् ॥ PĀNĀT. I, 474. निरुपद्रव der keinen Unfall erleidet oder erlitten hat, von Personen MBH. 3, 94. R. 6, 84, 1. PĀNĀT. II, 123. निरुपद्रवाणि नः कर्माणि प्रवृत्तानि भवन्ति ÇĀK. 31, 3. mit keiner Widerwärtigkeit verbunden, kein Unheil nach sich ziehend: स्थानम् PĀNĀT. 74, 20. मार्गः 264, 25. विमले च प्रकाशेते विशाले निरुपद्रवे R. 5, 73, 56. सोपद्रव Ind. St. 2, 278, 5. — 2) Symptom (sowohl eine hinzukommende Krankheitserscheinung als Krankheitszufall überhaupt) SUGR. 1, 37, 5. 46, 21. 39, 2. 116, 6. 119, 11. तत्रौपसर्गिको यः पूर्वोत्पन्नं व्याधिं जघन्यकालत्रो व्याधिरूप-सृजति स तन्मूल एवोपद्रवसंज्ञः 127, 10. 12. उपद्रवेण नुष्टस्तु व्रणाः कृच्छ्रेण सिध्यति 2, 399, 10. 231, 12. 300, 5. 349, 6.

उपद्रष्टार (von दर्श् mit उप) nom. ag. Zuschauer, Zeuge AV. 11, 3, 54. अग्निर्वा उपद्रष्टा वायुरुपश्रोतादित्यौ ऽनुव्याता TS. 3, 3, 8, 5. 7, 5, 8, 1. ÇĀT. Br. 3, 4, 2, 5. ĀÇV. ÇR. 1, 2. KAUC. 49. ब्रह्मोपद्रष्टा सुकृतस्य साक्षात् 97. BHAG. 13, 22.

उपद्रुत s. u. हु mit उप.

उपधर्म (उप + धर्म) m. 1) eine untergeordnete Verpflichtung: एष धर्मः परः साक्षादुपधर्मो ऽन्य उच्यते M. 2, 237. 4, 147. — 2) Ketzler Buig. P. im ÇKDr.

उपधा (von धा, दधाति mit उप) f. P. 3, 3, 106, Sch. 1) (Unterschlebung) Betrug, Schelmerei, Ränke AK. 3, 4, 142. H. 378, Sch. उपधाभिश्च यः कश्चित्परद्रव्यं क्षेत्रः । ससकृपः स कृतव्यः प्रकाशं विविधैर्विधैः ॥ M. 8, 193. उपधाभिर्विज्ञिताः MBH. 2, 250. उपधाशुचि HIT. III, 16. अमात्यानुपधातीतान् (vgl. अत्युपधा) MBH. 2, 177. 15, 183. मायोपधा देवितारा ऽत्र सति 2, 2005. सति धर्मोपधाः श्रद्धाः R. 2, 23, 9. Vgl. उपधि. — 2) das auf die Probe-Stellen, = धर्मविर्यत्परीक्षणम् AK. 2, 8, 1, 21. = भिया धर्मविर्यकामिश्च परीता H. 740. — 3) gramm. der vorletzte, vorangehende Buchstabe (an den sich der Endbuchstabe anlehnt): द्वाधितोपधा द्रुस्त्वस्य RV. PRĀT. 4, 9, 2, 32. अत्याहर्णीत्पूर्व उपधा VS. PRĀT. 1, 35. AV. PRĀT. 1, 92. 2, 33. 55. 3, 27. Nir. 2, 1. 4, 25. 5, 12. P. 1, 1, 65. 4, 1, 54. AK. 3, 6, 25.

उपधातु (उप + धातु) m. 1) Halbmetall; es werden deren 7 namhaft gemacht: मालिका, तुल्यक, अश्व, नीलाञ्जन, मनःशिला, कुरिताल, रसाञ्जनः; ÇKDr. Verz. d. B. H. 290, 16. उपधातुशोधनमारणम् No. 958. Vgl. उपरस. — 2) ein untergeordneter Bestandtheil des Körpers, sieben an der Zahl: Milch, die monatliche Secretion, Fett (वसा), Schweiss, Zähne, Haare, Lymphe; VAIDJ. im ÇKDr.

उपधौन (von धा, दधाति mit उप) 1) n. a) das Aufsetzen: दन्तिणार्थे कपालोपधानम् KĀTJ. ÇR. 5, 8, 15. 2, 4, 25. 16, 7, 14. KAUC. 24. — b) Kissen, Polster AK. 2, 6, 2, 39. TRIK. 3, 3, 230. H. 683. an. 4, 163. MED. n. 169. AV. 14, 2, 65. आसन्द्री सोपधाना KĀTJ. ÇR. 21, 3, 29 (so v. a. उपवर्कण ÇĀT. Br. 13, 8, 4, 10). यः सुखेयूपधानेषु शेते R. 2, 42, 15. सुतास्तु ते सर्व एव कृत्वा च तेषां चरणोपधाने MBH. 1, 7183. दिव्यपादोपधाने च निषण्णः परमासने 2, 389. कृतोपधानं तदा बलमासीत् 3, 656. कृतोपधाने मृदुविस्तीर्णं शयने SUGR. 1, 368, 9. मृदुगण्डोपधानानि 2, 41, 9. BHABR. 3, 89. उपधानी f. dass.: (कृत्वा) अशित भूमी सह पाण्डुपुत्रैः पादोपधानी च कृता कुशेषु MBH. 1, 7165. — c) Besonderheit, Eigenthümlichkeit (विशेष) TRIK. 3, 3, 231. फलोपधानाभावात् wegen Nichtdaseins einer besondern Folge SIDDH. K. zu P. 6, 3, 39. — d) Zuneigung H. an. MED. — e) Gelübde H. an. — f) Gift